Dr. Premlata
Department
of History

U.G SEM VI

स्वदेशी आंदोलन

जुलाई 1905 ई॰ के बाद से आंदोलन ने इतनी तेजी से और पकड़ा कि लोग विस्मित रह गए। उसने सारी परंपरागत परिपाटियों को तोड़ दिया, उग्र कार्रवाई के नए-नए तरीके विकसित किए और अपने आधार को विस्तृत करते हुए स्वराज की लड़ाई का रूप धारण कर लिया। स्वदेशी आंदोलन के इतिहास को जानने के लिए अति आवश्यक है बंगाल की स्थिति को जानना।

रिसले के विश्लेषण में जितनी बातें कही गई थी कि संपूर्ण विभाजन विरोधी आंदोलन विशेष हित वाले कुछ समूहों द्वारा अभिप्रेरित है। जब योजना का विस्तार किया गया और विधान-परिषद तथा राजस्व बोर्ड से युक्त एक पूर्ण प्रांत की तस्वीर पेश की गई तो उससे आरंभ में आपत्ति करने वालों में से कुछ लोग निस्संदेह संतुष्ट हो गए और सलीमुल्ला के नेतृत्व में मुसलमान भद्रजनों का एक अच्छा खास हिस्सा विभाजन का उत्साही प्रशंसक बन गया। पुरानी धारा के राजनीतिज्ञ अपने आप में कोई बड़ी समस्या उपस्थित नहीं करने वाले थे, इसका संकेत 8 जुलाई 1905 ई॰ को बंगाल विधान परिषद में दिए गए अंबिकाचरण मजुमदार के भाषण से मिलता है। भाषण का अंत उन्होंने "बंगाल के नक्शे को समेट लेने" के आह्वान से किया, जो शायद इसके ठीक महीने भर बाद 7 अगस्त को अंबिकाचरण को टाउनहाल में एकत्र विशाल समुदाय के समक्ष अपने शब्द वापस लेते हुए कहना पड़ा - मैंने कहा था संघर्ष समाप्त हो चुका है। अब मुझे लगता है कि सच्चा संघर्ष अब आरंभ हुआ है।

Premlata
History